बी॰ए॰ भाग-2
हिन्दी-रचना
'उत्तर सीता-चरित'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी॰ के॰ कालेज,
डुमराँव, बक्सर (बिहार)

'उत्तर सीता-चरित' – कलक्टर सिंह केसरी
सीता का चरित-चित्रण –

कलक्टर सिंह केसरी कहते हैं- "पति परित्यक्ता किन्तु मातृ-पद-गर्विता इसी सीता पर मेरी कविता रीझ गई।" तात्पर्य यह कि उत्तर सीता चरित में उस सीता का चरित विकसित हुआ है, जो पति-परित्यक्ता होने का दुख मातृ-गर्विता होकर भुला बैठी है।

सीता का मातृ-स्नेह केवल अपने पुत्रों कुश और लव तक सीमित नहीं है। इसका मतलब यह नहीं कि उसका स्नेह अपने पुत्रों पर कम है। वह अपने पुत्रों के कल्याण के लिए निरंतर चिंतित रहती है। पति द्वारा परित्याग की पीड़ा में वह रह-रहकर डूब जाती है, किन्तु विरजा उसे समझाती है कि वह सब कुछ भुला अपने पुत्रों के भविष्य की पीड़ा का ही एकमात्र वहन करे। वस्तुतः सीता पति-परित्याग को उस शुकी का अभिशाप मानती है, जिसे उसने बचपन में उसके शुक से अलग कर पिंजड़े में बंद कर रखा था और जो चार माह में ही पति-वियोग में मर गई थी। किन्तु विरजा लव-कुश की ओर संकेत कर कहती है –

सारी चिंताएँ भुला
आ गए थे अब इन्हें सम्हाल सखी
पिछली पीड़ाओं का निदान
अब नई पीर यह पाल सखी।

सीता भी पुत्र के भविष्य की पीड़ा को सबसे अधिक महत्व देती है और मानती है कि –

जिस नारी को यह पीर नहीं
वह सचमुच भाग्य वंचिता है।

सीता के सोचने की धारा बदलते ही उसे प्रियतम राम के साथ मधुर दिन याद आने लगे, जब लवकुश को उसने अपने गर्भ में धारण किया था —

वह दुपहरी रूप की थी-प्राण-दान की मानिनी मैं
दो हृदय की क्षुद्र सीमा में बँधी अनुरागिनी मैं
आज मंगल मातृपद पा भुवन में अभिमानिनी मैं।

मातृपद का ही अभिमान सीता-चरित का सर्वस्व है। स्थिति यह है कि सीता अपने पुत्रों को दिव्यगुणों से विभूषित और संपूर्ण विद्याओं की खान बना देखना चाहती है। यही कारण है कि जब ऋषिवर बताते हैं—

"पुत्र तुम्हारे स्वयं सिद्ध हैं"...
मात आवृत्ति कर रहे उनकी,
जो पढ़ी हुई सम्यक विद्याएँ प्राक्रम' कोमल किशोर पर
धनुर्वेद के पंडित तेजस्वी राघव से ये राघवनंदन –

तब 'पुलकिता जानकी की आँखें भर आईं।' पुत्रों के उज्ज्वल भविष्य को सुन माता का हृदय भर आया – यही उसका मातृ-गर्विता रूप है।

सीता फिर भी अपने पुत्रों में राम से अधिक अपनी छवि देखना चाहती है, इसीलिए कहती है –

संतानें मेरी होनी थीं मुझ जैसी हो गए किन्तु ये
लवकुश पिता सरीखे।'

सीता को संतोष तब होता है जब ऋषि बताते हैं, तुम लव-कुश में अदृश्य आत्मा होकर बैठी हुई हो और उसका प्रत्यक्ष प्रमाण तुम उनके कोकिल कंठ से रामायण गान सुनकर प्राप्त कर सकती हो।

सीता को अपने हकों के स्वत्व की भी चिन्ता है, किन्तु उसका भी निदान वाल्मीकि यह कहकर करते हैं कि राम के अश्वमेध-यज्ञ में रामायण-गान सुना उसके पुत्र राम के द्वारा अपना लिये जायेंगे, फिर स्वत्व स्वतः मिल जायेगा। किन्तु सीता को यह तरीका गा-बजाकर भीख माँगने जैसा लगा, किन्तु ऋषि आश्वस्त करते हैं कि उसके पुत्र सिंह हैं और सिंह अपने सिंहनाद से ही अपना स्वत्व स्वयं प्राप्त कर लेता है।

लव-कुश के स्नेह में भींगी हुई सीता का चरित्र वस्तुतः व्यापक है- उसका मातृ-स्नेह तो पशुओं और पादपों तक फैला हुआ है। यही कारण है कि वह मृगछौनों को कलश से जल पिलाती हुई उन्हें ऐसे देखती है जैसे माता अपनी इकलौती संतान को देखा करती है। वह नव विरवे को इस तार तन्मयता से सींचती है, जैसे माता अपने नवजात शिशु का लालन करती है। वह बबूल-वृक्ष पर इसलिए अधिक ममत्व दिखाती है, क्योंकि लव-कुश से आठ माह वह बड़ा है और उसी ने सर्वप्रथम सीता में मातृत्व को जगाया था।

सीता के चरित्र का दूसरा पहलू है ऋषि वाल्मीकि के प्रति अपार श्रद्धा। वह उन्हें पितृतुल्य मानती है। कहती भी है-

'कुलपति कृपालु ते पिता-तुल्य'।

साथ ही वह विरजा को भी मुँहबोली बहन की तरह प्यार करती है। सीता में यह क्षमता है कि आजन्म कुमारिका विरजा की कितनी पहुँच है- वह समझ सके। इसलिए जब विरजा गंधकली नामक आश्रम-पालिता मृगी को मृग के प्रेम में उतावली देखती है तो उसे ताने देती है कि वह पुरुष की सत्य पहचान रखे। ऐसा न हो कि उसका प्रियतम मृग कंचनमृग की तरह छली हो।

वस्तुतः सीता के परित्यक्तारूप को देख वह पुरुषों के प्रति कठोर हो गई थी। वह पुरुष को घाट-घाट का पानी पीनेवाला अपने हृदय में वासना-सर्पिणी को पालने वाला, रूप की भीख माँगनेवाला, बँदेलियों की तरह नारी पक्षी की हत्या करने वाला तथा अपने कर्म-यज्ञ के हवन कुंड में समिधा बनाकर नारी को डाल देने वाला अत्याचारी मानती है। सीता इसका प्रतिवाद करती है और गंधकली को उसके प्रियतम के पास जाने के लिए मुक्त कर देती है। सीता ने कहा कि विरजा तूने पूर्ण पुरुष का मूल्य सही रूप में नहीं आँका है। पूर्णचंद्र के बिना चांदनी जिस तरह नहीं निखरती वैसे ही पूर्ण पुरुष के बिना नारी नहीं खिलती। वह कहती है कि आजन्म कुमारिका होने के कारण विरजा को इसका अनुभव नहीं है। वह बताती है कि पुरुष की पुकार प्राणों के आर-पार हो जाती है। नारी के एकांत बंद सुनसान शांत घर की किवाड़ अचानक खुल जाती है और उसमें रश्मि का ज्वार उफनने लगता है। वह कहती है——

आकाश पुरुष नारी धरती
जब पुरुष स्नेह बरसाता है
तब नारी के जीवन के मधुबन में -
बसंत आ पाता है।—

तात्पर्य यह है कि सीता नारी-पुरुष के शाश्वत आकर्षण से परिचित है, किन्तु वह ऐसी नारी नहीं है जो किसी भी पुरुष की पुकार पर अपने को न्योछावर कर दे। यही कारण है कि वह एक विशिष्ट नारी का भी परिचय देती है —

पा एक बावली भी जिसको -
विश्वास अटल खाती घन का
घटती न लगन मिटती न रटन
घन है बरखा या देकर का।

फिर यह बताती है कि वह स्वयं ऐसी ही नारी है—

मैं वही चातकी उसी पाँत की
एक बावली हूँ बिरजा
चातकी भला क्या जाने क्यों
वैसी उसको विधि ने लिखा

सीता का राम के प्रति अटूट प्रेम है। ऐसा प्रेम जो प्रतिदान भी नहीं माँगता। बिरजा जब कहती है कि पुरुष की शिकायत उसने इसलिए की कि अश्व मेध में श्री रामचन्द्र उसकी जैसी ही कंचन की सीता बनवा चुके हैं - यह तो शीश काटकर बाल बचाने जैसा कृत्य है, तब नारी की महत्ता के संबन्ध में सीता कहती है -

कमनीय कुसुम बनना,
देवता चरण पर चढ़ना है सुखकर

पर फल देकर प्रसाद बन
बँट जाना उससे भी बढ़कर।

सीता स्पष्ट कहती है कि उसे राम से कोई शिकायत नहीं है क्योंकि—

जिसने जीवन में गौरवमय
गर्वी मातृत्व बो दिया है
उसे माँगना या कि पाना
रह गया कहाँ कुछ भी बाकी
वह वंदनीय, आलोच्य नहीं—
मैं सत्य कह रही—तुम साखी।

सीता को गीतों से भी बहुत प्यार है, इसीलिए वह विरजा को तो गाने को कहती है, खुद भी आवश्यकता पड़ने पर गाती है।

यह सीता चित्रकला में भी दक्ष है। वरुण के यहाँ से रामायण-गान सुनाकर लौटने वाले लव-कुश को सीता ने अपने बनाये चित्रों को दिखाया, जिन्हें देख लव-कुश को रामायण से कम महान् यह चित्र कृति नहीं लगी। सीता अपने मातृत्व-स्नेह का पशु-पादपों तक, विस्तार कर सबसे विलक्षण और महान् बन गई है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर-(बिहार)